धर्म जीवन

वार्षिक चन्दा रु. 50/-

फरवरी - 2011

* परोपकार के बिना ज़िन्दगी मौत है
* माता पिता एक अनमोल निधि
* बच्चों के प्रति हमारे कर्तव्य
* जड़ों से जुड़े पंख
* यहां मुस्कान को पलने दें
* दीजिए बच्चों को उनका बचपन
* बच्चों की उचित परवरिश
* शुभ संग्राम

पृष्ट 20 का बाकी

पूजनीय भगवान की ज्योति में यह विकार नज़र आता है और उनसे मोक्ष पाए जनों के उदाहरण दिए। स्वयं के हानि परिशोध के साधनों का वर्णन किया। कई दृष्य ऐसे बताए, जो हाजरीन ने स्वंय देखे हैं।

28.11.2010, 9 बजे सुबह की सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। सभा में पूजनीय भगवान के सर्वहितकारी रूप का वर्णन किया। पूजनीय भगवान द्वारा हर प्रकार के हित का ब्यान करके उसकी व्याख्या की। फिर साधन करने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया। गुरू महाराज की पवित्र छवि घर में अवश्य होनी चाहिए। विधिवत साधन करके गुरू के देव प्रभाव प्राप्त करना ही असली साध न है। महोत्सव मुबारक पर पहुंचने की प्रेरणा दी। सभाओं में शामिल होने और सब सेवाओं के लिए ध न्यवाद दिया। यहां से श्रीमान बलबहादुर जी समेत श्रीमान जी मानसा के लिए रवाना हो गए।

मानसा: – यहां रात को मनोज कुमार शर्मा जी के घर टीचर कलोनी में सभा रखी गई। श्रीमान तेज राम जी शर्मा कल्याण से भी यहां समय पर पहुंच गए। उन्होंने मनोज कुमार जी के साथ लोगों को सभा का पता दिया। यह सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। देव धर्म की विलक्षणता के विषय में बताया गया। देव धर्म की शिक्षा किस प्रकार नई है और इन्सानी ज़िन्दगी में परिवर्तन का काम कर रही है। उदाहरणों द्वारा सुगम ढंग से सभापति जी ने विषय को साफ किया।

28. तारीख को ही देर रात को श्रीमान बलदेव सिंह जी ने डा० सुबोध जी के घर उनको और उनके डा० सपुत्र को लेकर सभा करवाई। बताया कि अपने से निकल कर किसी के लिए काम आना आत्मिक जीवन के लिए ज़रूरी है। इस नियम को विस्तार से समझाया और महोत्सव पर आने की प्रेरणा की।

29 नवम्बर को सुबह के समय फिर टीचरज़ कलोनी में श्रीमान बलदेव सिंह जी ने सभा करवाई। इस सभा में विकास के नियम के विषय में बताया गया चारों जगतों में विकास का नियम काम कर रहा है। विकास क्रम में परम पूजनीय भगवान देवात्मा का आर्विभाव हुआ है। उनकी धर्म के विषय में शिक्षा और मनुष्य हृदयों में उनके निराले कारज के विषय में बताया। बताया कि अच्छा बनना वा श्रेष्ठ बनना ही ध र्म है। पूजा, पाठ, जप, तप आदि धर्म नहीं। ईमानदारी, पवित्रता, सन्मान, शुक्रगुज़ारी के बिना धर्म नहीं होता। इन्हीं भावनाओं से मनुष्य उच्च बनता है। गुरू महाराज में अधिकारी मनुष्यों को उच्च बनाने की पूर्ण सार्थ्य है। सुन्दर घटनाएं पेश की गई।

इन सभाओं से हाज़रीन बहुत प्रभावित थे, और ऐसी संगत और रखने का भी इरादा ज़ाहिर किया। कुछ जन महोत्सव पर पहुंचने को तैय्यार हुए। यह संग्राम काफी सफल रहा।

(एक सेवक)

मां जीवन में विशेष क्यों है -

जब आप बरसात में भीगकर घर आते हैं, तो भाई कहता है- छाता क्यों नहीं ले गए थे, बहन कहती है- बरसात बंद होने का इंतज़ार क्यों नहीं किया, पिताजी कहते हैं- जब जुकाम होगा तब पता चलेगा और मां..... वह भीतर से तौलिया लाकर सिर पोंछते हुए कहती है- नालायक बरसात! तुम थोड़ा रुक नहीं सकती थी क्या?

धर्म जीवन

खण्ड 24 अंक 2

फरवरी – 2011

वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

परोपकार के बिना ज़िन्दगी मौत है

मनुष्य का नीच जीवन अन्धेरा पैदा करता है। इसलिए आम हृदय अन्धेरे में ग्रस्त ही होते हैं। इस हृदय के अन्धकार के कारण मनुष्य जीवन की उच्च, कीमती और महान सचाईयों को देख नहीं सकता। जैसे कौओं को हंस की बोली समझ नहीं आती, इसी प्रकार मनुष्य को महान मनुष्यों की बताई बातें वा सचाईयां समझ नहीं आतीं। जब मनुष्यों की बातें ही समझ नहीं आतीं तो देवात्मा की बताई हुई उच्च कोटि की सचाईयां जल्दी उसके हृदय में कैसे उतर सकती हैं।

"परोपकार के बिना ज़िन्दगी मौत है" यह एक महान जीवन तत्व है। यह एक बहुमूल्य सचाई है। यह मनुष्य के हृदय में उतरनी कठिन है, इसलिए मनुष्य इससे कोई लाभ नहीं उठाता या बहुत नाममात्र ही लाभ उठाता है।

"परोपकार के बिना ज़िन्दगी मौत है" यह शब्द परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी की याद में "कर्मचारी निवास" के उदघाटन के समय फरमाए थे। उन्होंने कुछ इस तरह फरमाया था कि "ग़ाफिल मत रह" नामक लेख पढ़कर श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी के सामने यह आया था कि मैं कहां पड़ा हुआ हूं। जो चीज़ें मेरे साथ नहीं जा सकतीं, वह मेरी कैसे हुई। मनुष्य की हस्ती में आत्मा ही सार वस्तु है। उनको देवात्मा की रोशनी में यह सचाई नज़र आई। उनके सामने यह हकीकत खुली कि दुनियां के सब सामान असार हैं। श्रद्धेय श्रीमान जी की यह विशेषता थी कि उनके भीतर रूहानी रोशनी घुस गई जो आत्मा के तत्व दिखा सकती है। वह रुड़की कालिज से आकर पूजनीय भगवान को लहौर में मिले, वहां आकर उनके भीतर देव ज्योति के भिन्न देव तेज भी पहुंचा, तब उन्हें पता लगा कि "परोपकार के बिना ज़िन्दगी मौत है" श्रीमान देवत्व सिंह जी को मालूम हुआ कि ज़िन्दगी परोपकार से ही बनती है। उनके भीतर हलचल पैदा हुई। आत्म हित की जब इच्छा जागी, तो उनकी ज़िन्दगी में परोपकार का काम शुरू हुआ। यह आला ज़िन्दगी का आगाज़ था।

यह सचाई एक महान सचाई है कि परोपकार के बिना ज़िन्दगी मौत है, परन्तु मनुष्य को यह सचाई सारी उमर नज़र नहीं आती। यह सचाई देवात्मा की रोशनी में श्रद्धेय देवत्व सिंह जी को नज़र आई और सदा के लिए उनके जीवन में उतर गई। इस सचाई को देखने से श्रद्धेय श्रीमान सिंह जी का जीवन मार्ग उन करोड़ों अरबों मनुष्यों के जीवन मार्ग से बिल्कुल अलग वा निराला हो गया, जिनको उक्त सचाई बिल्कुल भी नज़र नहीं आई थी।

इस सचाई को गहराई से अनुभव करने के कारण श्रीमान जी के लिए इस संसार के सुख स्वाद और पदार्थ और सम्बन्धी फीके पड़ गए और वह पक्के इरादे से विशुद्ध परोपकार की राह पर पड़ गए, फिर कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।

आम मनुष्य इस धरती पर जन्म लेकर जब से होश सम्भालता है, तो उसको सुखदायक पदार्थ वा सम्बन्धी मिलते हैं, वह स्वभाविक ही बहुत अच्छे और प्यारे लगते हैं, और वह उनके साथ बन्धता जाता है, और अपने नीच सुखों की तृप्ति में लीन हो जाता है। साधारणत: मनुष्यों के जीवन का लक्ष्य वा मूल मन्त्र यह बन जाता है, (Eat drink & be Merry) खाओ, पीओ और मौज बहार करो। अधिक से अधिक सुख स्वाद देने वाले सम्बन्धी वा पदार्थ इकठ्ठे करो। यही जीवन है। ऐसे मनुष्य दुनिया के पदार्थों के कीड़े बनकर सारी उमर जीवन की बहुमूल्य सचाई को देख नहीं सकते कि परोपकार के बिना ज़िन्दगी मौत है। इसलिए उससे कोई लाभ नहीं उठा सकते। जितना भी मनुष्य दुनिया का कीड़ा बनता जाता है, वह उक्त सचाई से दूर होता जाता है।

देव समाज के सेवक, सेवकाओं को तो क्या, कर्मचारी होने पर भी यह बहुमूल्य सचाई नज़र नहीं आती। वह इस सचाई की रोशनी में जीना तक आरम्भ नहीं करते, बल्कि हृदय के अन्धेरे के कारण, सुख स्वादों की बहुत ही ज़ोरदार चाट के सदका अपने सुख स्वादों और उनके सामानों के साथ बदमस्त होकर अपने ऐसे जीवन को ही ठीक और रोशनी भरा देखकर ग़ल्तफहमी में सारी सारी उमर गुज़ार देते हैं।

आम इन्सानी बच्चे स्वाददार खानों के दिवाने, नित बदलते फैशनों और पोशाकों वा दिखावे के दिवाने, अच्छी और बड़ी कारों,कोठियों के दिवाने, फिलमों, एक्टरों, होटलों, कलबों पार्टियों, डिस्को डांसों के दिवाने बने रहते हैं, इसी को वह अपनी शानदार ज़िन्दगी देखते और महसूस करते हैं। ऐसी दिवानगी के दिवाने कभी भी इस बहुमूल्य जीवन की सचाई को नहीं देख सकते, उससे लाभ उठाना तो दूर की बात। उनके हृदय में अन्धकार बढ़ता जाता है, ज्यों ज्यों इन सुखों की चाट बढ़ती जाती है। उक्त पदार्थों की दिवानगी मनुष्य के पास कोई समय ही नहीं रहने देती, जिसमें मनुष्य कोई और बढ़िया सोच रख सके। उनको अपने स्वयं के दिखावे से ही फुरसत नहीं।

एक वा दूसरे व्यसन, नशे, मांसाहार, शिकार, जुए, लिंग तृप्ति के जान लेवा इश्क मनुष्य को अन्धा बनाए रखते हैं, उसको कोई उच्च सोच आने ही नहीं देते। परोपकार के बिना ज़िन्दगी मौत है,किन पागलों की बोली है, वह समझ नहीं सकते।

धन, धरती और पदार्थ भी मनुष्य प्रकृति के लिए आकर्षण का केन्द्र हैं। सारा संसार इस मीठी झलक पर मोहित है। कीड़ों की तरह अरबों मनुष्य इनके परिणाम देखे बिना इनकी प्राप्ति पर लट्टू हुए रहते हैं। धन, धरती वा सुख ही लक्ष्य बन जाता है। यह समझ आना असम्भव सा हो जाता है कि इससे ऊंचा भी कोई काम हो सकता है। उनके लिए धन की प्राप्ति नई जान संचार कर देती है। क्योंकि इसी में उन्हें तृप्ति मिलती है। धन का वियोग एक एक जन के लिए घातक हो जाता है। परोपकार पागलों का काम दिखाई देता है।

मदर टैरेसा को किसी जन ने रायल रौस बहुत बड़ी कार भेंट की थी, उन्होंने उसमें बैठकर भी नहीं देखा, उसको झट नीलाम करके, पैसे सेवा में लगा दिए।

मान, इज्ज़त, मर्तबा, पद, पोज़ीशन और प्रभुत्व आदि भी मनुष्य प्रकृति को बहुत आकर्षित करते हैं। राजनैतिक सर्कल में तो यह दिवानगी की हद तक होते हैं। यह सारे आकर्षण मनुष्य को अन्धकार की ओर ले जाते हैं, जिससे बहुत सी बहुमूल्य

सचाईयां देखने की क्षमता मारी जाती है।

परोपकार के बिना जीवन मौत है, यह सचाई उन लोगों को ही कुछ दिखाई दे सकती है जिनको ज़िन्दगी क्षण भंगुर दिखाई दे, जिनको उमर दौड़ती वा मौत की ओर जाती दिखाई दे। जिनको मरना याद ही नहीं रहता, जो संसारिक सुखों, पोशाकों, जेवरों, कारों, कोठियों वा स्वाददार खानों आदि पर परवानों की तरह गिरते हैं और उन्हें पता ही नहीं लगता कि कब अन्त समय आ दबोचता है, वह यह सचाई नहीं जान सकते।

भगवान देवात्मा ने एक बार फरमाया था, "हम नेचर के अंश है, हमारे पास जो कुछ भी है, वह वास्तव में नेचर की ओर से बतौर अमानत है यह हकीकत यदि सामने खुल जाए तो यह सत्य तुम्हें दिखाई देना चाहिए कि यदि यह हैं, तो उसके सम्बन्ध में देवात्मा जो रोशनी रखता है, वह इस विषय में क्या शिक्षा देता है? वह यह है कि मनुष्य को उन सब शक्तियों से ऊपर होना चाहिए कि जो अमानत में ख़्यानत करने के लिए मजबूर करती हैं। और दूसरी ओर अपने धन को नेचर के विकासकारी नियम का साथ देने के लिए इस प्रकार काम में लाना चाहिए: -

1. अपने आश्रित जनों की रक्षा और उन्नति के लिए
2. अपने सम्बन्धों में जहां हानिकारक बने हैं, उस हानि का परिशोध करने के लिए
3. जिस जगत से हमने हित पाया है या पा रहे हैं या हित पाने की उमीद रखते हैं, उन हितकर्ताओं की सेवा के लिए
4. इस नेचर के भीतर जो अस्तित्व हैं, जो हमारे उपकारी भी नहीं, उनकी बेहतरी या उनके उपकार के लिए, जिस में सब आ जाते हैं।

हमें इसी विधि से अपने धन वा जायदाद को खर्च करना चाहिए। अब इस सम्बन्धी ख़्यानत कब होती है, जब मनुष्य हित परिशोध वा हानि परिशोध के भाव से कुछ करना नहीं चाहता। ऐसे अमल सब चोरी, डाका और अपहरण में शामिल हैं, जिससे आत्मा नीच गति परायण होकर ख़त्म हो जाता है, हमारे अपने पास जो कुछ है, हमें इसी प्रकार खर्च करना चाहिए।

गुरू महाराज बार बार यह सचाई दिलों में उतारने की कोशिश करते थे कि जब तक मनुष्य अपने से निकल कर दूसरों के लिए सेवाकारी नहीं होता, तब तक धर्म जीवन का आरम्भ नहीं होता।

पर सेवा के बिना मनुष्य एक मुर्दा लाश की तरह रह जाता है, केवल इतना भर है कि उसकी सांसें चलती हैं। परोपकार के बिना मनुष्य पशु ही रह जाता है। पशु भी अपने लिए मारा मारा फिरता है, गोबर का कीट भी अपना पेट तो भरता है।

"बिन सेवा धरिग हाथ पैर, होर नेह फल करनी" सेवा और सच्चा परोपकार ही धर्म जीवन का रहस्य है।

मिस्तरी वधावा राम जी (दाता जी) मज़दूरी करते, उसमें से भी सेवा के लिए समय निकालते और लोगों से मुफ्त सेवा की भीख़ मांगते।

श्रीमती जमना बाई जी धर्म पत्नी श्रीमान सेठ राधा कृष्ण जी बुढ़ापे में प्रत्येक वर्ष संगत में आतीं और कई महीने रहतीं। एक अमीर परिवार से सम्बन्धित होकर हररोज़ कई घण्टे लोगों के घरों को विज़िट करती और लंगर के लिए आटा दाल इक्ठ्ठा करतीं, स्त्रियों की मिथ्या छुड़वातीं, संगत का पता देतीं। बहुत वृद्ध होकर भी अपना भला करने का कोई मौका नहीं छोड़ती थीं। काश! हमें गुरू महाराज की रोशनी मिल सके और यह सचाई कि "परोपकार के बिना जिन्दगी मौत है" इसकी समझ आ सके और हमारे दिलों में गहरी उतर सके।

बलदेव सिंह

माता पिता एक अनमोल निधि

माता पिता बच्चे के लिए नेचर का सब से बड़ा वरदान है। इस बात का महत्व वही समझ सकते हैं, जिनके माता पिता नहीं रहते। जिस दिन से बच्चा मां के गर्भ में होता है, उसी समय से मां अपने खून से सींचती है उसके वह 9 महीने जिस कष्ट में से गुजरते हैं, परन्तु अपने बच्चे के आने का एहसास उसे बड़े से बड़े कष्ट सहने के लिए तत्पर रखता है। फिर मां अपनी जान को हथेली पर रखकर बच्चे को जन्म देती है और बच्चे के विकसित होने की सब सम्भावनाएं खोल देती है। उसको रात भर जागना पड़े, गीले वस्त्र पर सोना पड़े, कोई भी कष्ट अपने बच्चे के सामने उसे छोटा लगता है। बच्चे की एक एक मासूम अदा पर माता पिता किस कदर बलिहारी जाते हैं, उसकी व्याख्या शब्दों में नहीं हो सकती। वह नन्हीं सी जान नहीं जानती कि उसकी पालना में, उसको अच्छे से अच्छे सामान, कपड़े, खिलौने देने में माता पिता कैसे दिन रात एक कर देते हैं। उनकी अपनी जरुरतें ज़ीरो हो जाती हैं। ज्यों ज्यों बच्चा बड़ा होता है, तो उसे अच्छे स्कूल में डालने के लिए एक एक माता पिता अपनी हैसीयत से बढ़कर खर्च करने के लिए तत्पर रहते हैं। बच्चे की उन्नति के लिए किसी की मिन्नतें करनी पड़ें, किसी के आगे झुकना पड़े यहां तक कि कर्ज़ भी उठाना पड़े, तो मां बाप पीछे नहीं हटते, संसार में कोई और सम्बन्धी इस हद तक त्याग नहीं कर सकता, जितना मां बाप कर सकते हैं। यहां तक कि वह अपनी जान की बाजी भी लगा सकते हैं। छोटी उमर में बच्चे जो सकून मां की गोद में अनुभव करते है, जो सुरक्षा उसकी गोद में आकर अनुभव करते हैं, वह कहीं नही करते।

बच्चे थोड़े बड़े हो जाते हैं, उनके घर आने में देरी हो जाए, तो मां अपलक रात गुज़ार सकती है, जब तक वह बच्चे को सुरक्षित न देख ले, उसका सुख चैन छिन जाता है। माता पिता स्नेह के अथाह सागर हैं। ऐसे अथाह प्यार के सागर यदि न रहें, तो बच्चे अनाथ कहलाते हैं। अनाथ बच्चों को जो कुछ सहना पड़ता है, उसका अनुभव हर उस बच्चे के लिए कड़वाहट भरा होता है, जिनके माता पिता नहीं रहते।

इतिहास बताता है कि जब अकबर बादशाह के पिता का देहान्त हुआ तो वह छोटे थे, परन्तु बड़े होने पर जब मां का देहान्त हुआ, तो उनको चुप कराना मुश्किल था। जब उनसे पूछा गया तो उन्होंने फरमाया कि " आज, मुझे 'अकबरा' कहकर कोई नहीं बुलाएगा। मैं दुनियां में 'अकेला' हो गया हूं"

मां तो ममता, वात्सल्य वा त्याग की मूर्ति होती हैं। माता पिता का प्यार नि:स्वार्थ होता है। बच्चों के लिए रात दिन स्वयं सब कुछ न्यौछावर कर भी बदले में कुछ नहीं चाहते।

ऐसी त्याग की मूर्तियों की पूजा होनी चाहिए। उनको सम्मान और सत्कार मिलना चाहिए, परन्तु ऐसा बहुत कम होता है। ज्यों ज्यों बच्चे बड़े होते जाते हैं, उनकी नीच ख़्वाहिशें बढ़ती जाती हैं, स्वार्थ बढ़ता जाता है और वह मां बाप से सेवा पाना अपना जन्म सिद्ध अधिकार समझने लगते हैं, परन्तु अपने कर्तव्य भूलने लगते हैं। अपनी एक इच्छा पूरी न हो, वह सब सेवाओं को भूलकर माता पिता को शत्रु समझने लगते हैं, अपशब्द बोलते हैं। यहां तक कह जाते हैं कि आपने हमारे लिए किया ही क्या है, इससे बड़ी तलवार वह माता पिता पर क्या चला सकते हैं। ऐसे कृतघ्न बच्चे घर घर में हैं। जिन बच्चों के जन्म पर माता पिता ने मिठाईयां बांटी थी, खुशियां मनाई थी, वही बच्चे, उनकी तड़पन, उनके आंसुओं का कारण बन जाते हैं। दिन पर दिन बच्चों की उदण्डता, उनका स्वार्थ, उनकी मनमानी बढ़ती जा रही है।

बच्चे और बड़े होते हैं, उनके ब्याह शादियों में माता पिता कर्ज़ाई हो जाते हैं, परन्तु बच्चों को परवाह नहीं होती। वह अपनी खुशियों में इतने मदमस्त हो

जाते हैं कि माता पिता किस हालत से गुज़रते हैं, उसकी परवाह नहीं होती। फिर उनकी अपनी अपनी ज़रूरतें इतनी बढ़ जाती हैं कि माता पिता बोझ लगने लगते हैं, उनके रहने से उनके बजट बिगड़ने लगते हैं।

पिछले दिनों ही एक अच्छे घराने के बेटे की घटना का पता लगा। माता पिता ने सारी जायदाद उसके नाम कर दी, इकलौता बेटा था, परन्तु उस स्वार्थी बेटे के हाथों माता पिता बेहद दुखी हैं। उनकी बेटी सुसराल से आई तो पिता ने उसे दो सूट लाकर दे दिए, फिर क्या था, बेटे ने आसमान सिर पर उठा लिया कि जब उसकी शादी पर खर्च कर दिया है, तो अब उस पर खर्च क्यों किया जाता है, पिता को किस कदर अपमान सहना पड़ा। वह बेटा जैसा व्यवहार दे रहा है, उसका 7 – 8 वर्ष का बेटा हररोज़ देखता है, वह अपने दादा दादी को बेहद प्यार करता है, एक दिन उसने कह ही दिया कि "पापा, जैसा व्यवहार आप मेरे दादा, दादी से करते हो, मुझे बड़ा होने दो, मैं भी आपके साथ ऐसा ही व्यवहार करूंगा" यह बात सत्य है कि जैसा हम बोएंगे, काटना तो पड़ेगा।

ऐसे ही बच्चों के माता पिता Old age homes में जाते हैं। यह वृद्ध आश्रम हमारी संस्कृति पर कलंक हैं। जिस धरती पर श्रवण जैसे पुत्र पैदा हुए, भीष्मपितामह जैसे स्वार्थ त्यागी पैदा हुए, वहां पर वृद्धआश्रम में रहने के लिए माता पिता मजबूर हों, धिक्कार है ऐसी सन्तान पर।

किसी सीमा तक माता पिता भी बच्चों की परवरिश में चूक जाते हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि इसमें जन्मजात योग्यता का भी बहुत बड़ा रोल है, परन्तु यदि माता पिता शुरू से बच्चों में त्याग, सेवा, सम्मान, कृतज्ञता की भावनाओं को जगाने का प्रयत्न करें, तो कुछ बेहतरी अवश्य आ सकती है। जो माता पिता अपने बज़ुरगों की सेवा के दृष्टांत बच्चों के सामने रखते हैं, उनका अच्छा प्रभाव अवश्य बच्चों पर पड़ता है। परन्तु अकसर देखा जाता है कि बच्चों के भीतर अच्छे भाव पैदा करने की कोई कोशिश ही नहीं की जाती, प्यार बहुत लुटाया जाता है।

मैंने देखा है कि Training College की लड़कियों को भी नीति शिक्षा के Period में हम जो बातें बताते हैं, वह उन पर बहुत अच्छा प्रभाव डालती हैं, और वह उनका प्रकाश भी करती हैं, उनके लिए यह बातें नई होती हैं। इस प्रकार यदि माता पिता बचपन से इस ओर ध्यान दें, तो बच्चे इतने कृतघ्नता के व्यवहार न दें।

मैंने अकसर देखा है कि जो परिवार परम पूजनीय भगवान देवात्मा से जुड़े थे, परन्तु किसी कारण वह अब समाज से दूर भी हैं, तो भी उनके बच्चों तक अभी वह संस्कार काफी सीमा तक हैं। यह माता पिता और बच्चों के सम्बन्ध में जो नज़ारे कभी उन्होंने गुरू की संगत में देखे थे, वह अभी भी उनके दिलो दिमाग़ में ताज़ा है। आगे उनके बच्चों में वह संस्कार घटते जा रहे हैं।

माता पिता का भी यह कर्तव्य बनता है कि वह अपने जीवन से स्वार्थ, त्याग, ईमानदारी, कृतज्ञता, कर्तव्य परायणता, बड़ों के प्रति सम्मान दूसरों के प्रति सद्भाव के दृष्टांत अपने जीवन से पैदा करें ताकि उनके बच्चे उन पर गर्व कर सकें और उनका अनुकरण कर सकें।

अगर हमारे परिवारों में हमारे बच्चे हमारे प्रति सम्मान, वा कृतज्ञता के व्यवहार दे रहे हैं, वह सब परम पूजनीय भगवान की कृपा हैं। जिन जिन परिवारों में बच्चे माता पिता के लिए दुखदाई न बनकर उनके प्रति कृतज्ञता के व्यवहार देते हैं, वह परिवार बहुत सौभाग्यवान हैं। वह बच्चे अपने माता पिता के लिए ही वरदान नहीं बल्कि अपने बच्चों को भी उस राह पर डालने का प्रयत्न करके बच्चों की सही मायनों में परवरिश कर रहे हैं। यदि वह गुरू महाराज को और पहचान सकें और संगत की अवश्यकता को अनुभव कर सकें तो उनका और बहुत हित साधन हो सकता है।

सुरजीत बराड़

बच्चों के प्रति हमारे कर्तव्य

परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने सम्बन्धों में जो उच्च शिक्षा दी है, उससे परिवार नारकीय जीवन से बच गए हैं, यदि यही एक उपकार हम पर किया होता तो भी हम उनका ऋण नहीं चुका सकते थे। धर्म की शिक्षा, आत्मा की विज्ञानमूलक शिक्षा को समझना वा उसको जीवन में उतारना तो किसी किसी सौभाग्यवान के वश की बात है। हम सम्बन्धों में जीने के लिए मजबूर हैं, परन्तु मनुष्य का नीच जीवन उन्हीं सम्बन्धों में नर्क पैदा कर देता है। हमारा स्वार्थ, ईर्षा द्वेष, घमंड बेवफाई इन निकट से निकट सम्बन्धों में दरार डाल देते हैं। परम पूजनीय भगवान देवात्मा के देव प्रभाव जिन परिवारों में कुछ भी पहुंचे हैं, उनकी कायाकल्प हुई है। आजकल माता पिता के दिन हैं, जगह जगह पर माता पिता के सम्बन्ध में दिन मनाए जाते हैं, उनके उपकार, सद्गुण सामने लाकर उनका ब्यान किया जाता है, अपनी ग़ल्तियों के लिए क्षमा मांगी जाती है। उनके गलों में फूलों के हार डाले जाते हैं। यह ऐसा स्वर्गीय नज़ारा है, जो फरिश्तों के देखने योग्य होता है।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने इन दिनों को माता पिता सन्तान को समर्पित किया है, वह सर्वपक्षिय हितकर्ता हैं, उन्होंने जैसे माता पिता के प्रति बच्चों के कर्तव्यों वा व्यवहारों के लिए आदेश दिए हैं, वहां माता पिता को सन्तान के लिए क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए, उनके सद्गुणों को देखने, उनके प्रति भी यदि माता पिता से ग़ल्ती होती है, तो उनसे क्षमा मांगने के आदेश दिए हैं।

परन्तु अकसर हम एक ही पहलू में चलते हैं, सन्तान के प्रति आदेशों को महत्व नहीं देते। माता पिता के उपकारों से तो कोई उऋण हो ही नहीं सकता, इसमें कोई शक की बात नहीं, माता पिता बच्चों के प्रति ऐसी ग़ल्तियां कर ही नहीं सकते जो बच्चे कर सकते हैं, इसमें भी कोई शक नही, परन्तु हम मनुष्यात्मा हैं, हम जहां बच्चों को बेहद प्यार देते हैं, वहां अनेकों बार अपनी व्यवस्ताओं में उन्हें अनुचित व्यवहार भी दिया जाता है। उनकी कई छोटी छोटी खुशियों को रौंदा जाता है। छोटे छोटे बच्चे अपनी किसी छोटी सी उपलब्धि को लेकर माता पिता के पास भागे आते हैं, परन्तु उस समय उनका ध्यान और किसी ज़रूरी बात में होता है, तो हम उसे डांटकर भगा देते हैं, उनका सारा उत्साह ख़त्म कर देते हैं। इस प्रकार न चाहकर भी कभी कभी माता पिता बच्चों के भविष्य से खिलवाड़ कर बैठते हैं।

बच्चे वह फूल हैं, जो हमारी नादानी से मुरझा जाते हैं। बच्चे को कई बार हम अपनी अंह प्रियता से बुरे स्लूक दे देते हैं। जैसा बच्चा हम चाहते हैं, ज़रूरी नहीं कि वह वैसा बने। उसकी अपनी एक हस्ती है, हमने उसको जन्म दिया है, पाला है, पढ़ाया है, तो हमारा उस पर इतना अधिकार नहीं कि उसके अपने व्यक्तित्व को ही रौंद दें। माता पिता के लिए ऐसी कोई Training नहीं कि वह समझ सकें कि उनको बच्चों को कैसे पालना है। बच्चों को जन्म देना, अच्छे स्कूलों में भेजना, अच्छे वस्त्र वा कपड़े देना ही काफी नहीं, उनके पूरे व्यक्तित्व को विकसित करना, उनमें उच्च गुणों को उभारना भी माता पिता का कर्तव्य है, यदि हम ऐसा नहीं कर सकते तो अपने कर्तव्य में कुताही करते हैं और उसका परिणाम माता पिता और बच्चों को भुगतना पड़ता है।

जीवन चक्र चलता रहता है, जो हम बोते हैं, वही काटना पड़ता है। माता पिता और सन्तान के रिश्ते पर भी यही बात लागू हाती है। आपके भी माता पिता हैं यदि आप अपने बच्चों के सामने अपने माता पिता के महत्व को दिखाएंगे, उनके साथ समय बिताएंगे, उनकी खुशी के लिए कुछ करते दिखाई देंगे तो यह

व्यवहार कल सन्तान भी आपके साथ दुहराएगी। जहां बचपन में माता पिता के लिए ज़रूरी है कि वह बच्चों के साथ अच्छी तरह समय (Quality time) बिताएं और उसी प्रकार जब बच्चे आपके साथ कहीं outing में, कही कोई अच्छा संगीत सुनने में, कहीं पारिवारिक gathering में कहीं कोई अच्छा प्रोग्राम देखने में समय बिताना चाहते हैं, तो उन्हें निरुत्साहित न करें, सहयोग दें, ताकि आप उनकी खुशी को बांट सकें, इससे परिवार की खुशी दोगुणी हो जाती है।

देखा गया है कि आजकल अकसर माता पिता बच्चों के साथ समय बिताते हैं। अमरीका में मैंने देखा कि प्राइवेट स्कूलों की बसें नहीं है, वह माता पिता से आशा करते हैं कि वह बच्चों को खुद छोड़ने आएं और लेकर जाएं, उनका मतलब है कि अपने व्यस्त जीवन से माता पिता का बच्चों के साथ समय बिताने का सही तरीका है। उस समय बच्चे जो लगातार आपको अपने स्कूल, अध्यापक अपनी पढ़ाई की ढेरों बातें बताएंगे जो वैसे बता ही नहीं सकते। हम बच्चों को इस खुशी से वंचित न करें।

मैंने अपनी ज़िन्दगी में इन बातों को अपनाने की काफी कोशिश की है, फिर भी ग़ल्तियां होती हैं। आजकल के दिनों में बच्चों के बचपन को याद किया। जब मेरा पहला बच्चा मेरा बेटा मेरी गोद में आया तो उसकी खुशी को शब्दों में ब्यान नहीं किया जा सकता। उस बच्चे के जन्म ने मुझे मां का दर्जा दिया। 2 वर्ष बाद बेटी का जन्म हुआ तो ऐसा लगा कि मेरा परिवार पूरा हो गया है।

इन दिनों में बच्चों के गुण सामने आते रहे हैं। हमारी बहुत बड़ी खुशकिस्मती है कि दोनों बच्चों को अपने पूर्वजों से बहुत शानदार विरासत मिली। यह नहीं कि उन्होंने अपनी उमर में कोई ग़ल्तियां नहीं की, यह मनुष्य के बच्चे के लिए स्वभाविक है, परन्तु ज्यों ज्यों बड़े होते गए, उनके वह गुण उभरते गए, जो किसी किसी बच्चे के भाग्य में होते हैं। उनके भीतर बहुत कठिन परिश्रम करने, ईमानदारी, दयाभाव, इस कदर नज़र आता है कि मैं कई बार अनुभव करती हूं कि मेरे भीतर वह भाव इतनी गहराई में नहीं हैं। सबसे बड़ा गुण कृतज्ञता दोनों में इस कदर गहरी है कि माता पिता के लिए तो है ही, औरों से भी जिन जिनसे उपकार पाए हैं, उनके लिए हमेशा कुछ करते रहने का भाव है। अमरीका में अपने बेटे को देखती हूं, जिस कदर वह हमारी सेवा करता है, हमारी छोटी छोटी ज़रूरतों को पूरा करने, हमें दुनिया भर के सुख देने के लिए तत्पर रहता है, उसका शब्दों में ब्यान नहीं हो सकता। एक दिन मैं हैरान हो गई कि रात को 10 - 11 के बीच मुझे कुछ पैरों की आवाज आई तो मैं बाहर निकल कर आई तो देखा बेटा अपने पापा के कमरे से बाहर आ रहा है, मैंने पूछा तो उसने बताया कि लेटे हुए मुझे ख़्याल आया कि पापा के कमरे की बलांईडज़ (पर्दे की तरह की होती हैं) ऊपर की ओर बंद थी, जिससे सुबह जल्दी रोशनी अंदर आ सकती है, इसलिए मैंने सोचा कि अगर पापा जागते हुए तो मैं उन्हें ऊपर को बन्द कर दूं। मेरा दिल भर आया। थके हुए फिर बिस्तर से उठकर आना आसान नहीं होता और फिर इतनी छोटी सी बात के लिए। जो बच्चा इतनी तकलीफ का ध्यान रखता है, वह और क्या कुछ कर सकता है। गरीबों वा जरूरत मन्दों की सहायता करता है, हमारे देश में कोई विपदा आ जाए लाखों रुपया भेजता रहता है। अपने देश से बहुत गहरा रिश्ता है। अपनी बहन के लिए जो कुछ करता है, उसका ब्यान नहीं हो सकता। हमें इतनी बेफिकरी है कि हमारे जाने के बाद वह अपनी बहन को हमारी कमी महसूस नहीं होने देगा, वह भी भाई पर जान लुटाती है। दोनों एक दूसरे के बच्चों के लिए दो माता पिता की तरह हैं।

बेटी भारत में है, उसके अन्दर भी यह सब गुण वर्तमान हैं। हमारा सिर दर्द भी पता लग जाए तो

दिन में कितनी बार फोन करेगी, भागी आएगी। उसके पापा जब कई साल पहले कुछ दिल की बिमारी से बिमार हुए, तो किस तरह शताब्दी के आगे व्हील चेयर लेकर खड़ी थी बेशक उसकी ज़रूरत नही थी। कैसे डाक्टरों की मदद ली। हमें पता भी नहीं लगा कि कैसे सब कुछ हो गया।

पिछले दिनों उसने बताया कि उसका ड्राईवर, जो 5-6 वर्ष से उसके साथ है, उसका मकान बन रहा है। वह कहने लगी कि मामा, इस ड्राईवर ने मेरी और मेरे बच्चों की इतनी ईमानदारी वा वफादारी से सेवा की है, कि मैं इसका ऋण नहीं चुका सकती। मैंने इसे कहा कि तुम अपना मकान बना ले, चाहे छोटा हो, क्योंकि ड्राईवर की ज़िन्दगी हमेशा ख़तरे में रहती है, उसने कहा कि मैडम इतने पैसे मेरे पास नहीं हैं, तो उसी समय उसने कहा कि तीन लाख़ रुपया मैं दे रही हूं, वह हैरान रह गया और यह भी कहा कि यह कर्ज़ नहीं यह मेरी ओर से तेरी सेवाओं का उपहार है। जब उसने बताया तो हमारी भी खुशी का ठिकाना न रहा।

हमारी खुशकिस्मती है कि हम ऐसे बच्चों के माता पिता हैं, ऐसे बच्चे माता पिता के लिए वरदान होते हैं। इन दिनों में उनके गुणों और अपनी कमियों को याद करती रही हूं। बेशक इतने गुण रखकर यह बच्चे अपनी दुनियवी ज़िन्दगी में बहुत सफल हैं और सोसाईटी के बहुत मुफीद अंग बने हुए हैं और बन रहे हैं, परन्तु गुरू महाराज की संगत के जितने निकट होना चाहिए, उसकी कमी ख़लती है। कुछ समाज के हालात और कुछ बाहर के हालात गुमराह कर देते हैं। विश्वास तो नहीं बदले, परन्तु जो तड़प हमारे दिल में है कि उनकी योग्यताएं गुरू की ओर मुख करने में लगें, उसमें कमी है। हम कामनाएं और प्रार्थनाएं करते रहते हैं ताकि उनका मुख ज़्यादा से ज़्यादा गुरु की ओर हो और वह सच्चे मायनों में सद् सन्तान बन सकें। इस ओर मुख करने से उनकी योग्यताओं में और भी चार चान्द लग सकते हैं।

सुरजीत बराड़

कल्याण सत्संग

पाठक यह जानकर खुशी महसूस करेंगे कि हर साल की न्याई इस साल भी समाज उत्सव के अवसर पर कल्याण (जिला बठिंडा) मे विशेष सत्संग और माता-पिता सन्तान दिवस भी रखा गया है। यह सत्संग 25-26-27 फरवरी को रखा गया है। इतवार का दिन अन्तिम दिन होगा। पाठकों से निवेदन है कि वह अधिक से अधिक संख्या में और ज्यादा से ज्यादा समय के लिए वहां पधार कर इस सुअवसर से जहां आप लाभ उठाएं, वहां अपने परिवार और परिचित अधिकारी जनों को इस सत्संग पर लाकर सच्चे पुण्य के भागी बनें।

यात्रियों के ठहरने और भोजन बिस्तर आदि का प्रबन्ध हमेशा की तरह स्थानीय सेवक करने की खुशी प्राप्त करेंगे।

इस शुभ अवसर से ज़रूर लाभ उठाएं।

धन्यवादी होंगे।

प्रार्थी

मंत्री, देव धर्म मिशन

हमने इस अंक में माता पिता के बच्चों के प्रति कर्तव्यों की समग्री इकट्ठी करके दी है, ताकि हम माता पिता सन्तान दिवस पर इसके दूसरे पहलू को भी देख सकें, आशा करते हैं, कि यह माता पिता के लिए लाभदायक होगी। माता पिता भी बच्चों की सराहना के पत्र वा उन्हें इन दिनों कोई भेंट दें, तो यह सम्बन्ध और भी मिठास भरा हो सकता है।

जड़ों से जुड़े पंख

(नीता अम्बानी)

एक जैसे माहौल में कोई भी मां अपने बच्चों की परवरिश नहीं कर सकतीं। इसकी वजह यह है कि मां और बेटी के बीच एक पीढ़ी का फासला होता है। इसी फासले के कारण बच्चों की परवरिश के मायने और तरीके भी बदल जाते हैं। मेरी और मेरी बहन की परवरिश संयुक्त परिवार में हुई। मेरे माता-पिता ने मुझे शिक्षा और मूल्य दिए। उन्होंने हमें अन्य अभिरुचियों में भाग लेने के लिए हमेशा प्रोत्साहित किया। मुझे डांस का शौक था, सो मैंने इसे सीखा। अपनी मां से मैंने यह सीखा कि बच्चों के बड़े हो जाने पर उन्हें खुद फैसला करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। मेरे तीनों बच्चों ईशा, आकाश और अनंत की सोच और पसंद एक-दूसरे से बिल्कुल अलग है। इसी को देखते हुए मैं उन्हें पढ़ाई के साथ-साथ अपनी दिलचस्पियों पर ध्यान देने को प्रेरित करती हूं। मां अपने बच्चों के लिए प्रेरणा और मजबूती का स्रोत होती है। उंगली पकड़कर चलना सिखाने के अलावा वह उनके समग्र विकास का आधार तय करती है। मैं भी अपने बच्चों को सिर्फ दो चीजें ही दे सकती हूं। एक जड़ें और दूसरा पंख। मैं उन्हें अपनी जड़ों से जुड़ा देखना चाहती हूं और साथ ही यह भी चाहती हूं कि वे मौजूदा वैश्विक दौर में 'ग्लोबल सिटीजन' बनें। इसके लिए मैं कभी-कभी उनके साथ मां के बजाय दोस्त की तरह पेश आती हूं। उनकी सोच बांटती हूं और सही-गलत की समझाइश देती हूं। मैंने और मुकेश ने एक नियम बना रखा है कि हम तमाम व्यस्तताओं के बावजूद अपने बच्चों के साथ कुछ समय जरूर देंगे। मुकेश ज्यादा व्यस्त रहते हैं, सो यह काम मेरी प्राथमिकता सूची में सबसे ऊपर है। मैं बच्चों को एक संवेदनशील इंसान बनाने के साथ यह भी सिखाने की कोशिश कर रही हूं कि धन-दौलत ही अंतिम पहचान नहीं होती। पहचान बनती है प्रेम और दूसरों पर विश्वास करना सीखने से। इसीलिए मेरी कोशिश रहती है कि उन्हें इस बात की अहमियत समझ में आए और इसे वे अगली पीढ़ी के सुपुर्द करें।

बच्चों की दुनिया में झांकेगे,
तो ही जान पाएंगे कि बगीचे में घूमते छोटे-से
कीड़े को ऊंगली पर चलाने या फूटे टायर को पेड़
पर बांधकर झूलने में कितना मज़ा आता है।

यहां मुस्कान को पलने दें

(बच्चों की परवरिश में माता पिता इन बातों की ओर ध्यान दें)

गौर से अपने आस-पास देखिए। आप पाएंगे कि अभिभावक छोटे बच्चों को तो खूब डांट लेते हैं, आहत कर लेते हैं, जो चाहे कह लेते हैं। पर जैसे ही वे थोड़े बड़े होते हैं, फैसले करने की स्थिति में आते दिखाई देते हैं, अभिभावक अब तक के बर्ताव की कैफियत देते सजग हो जाते हैं। अब हर बात सम्भालकर कहते हैं। पर शब्दों की चोट बरसों बाद टूटे व्यक्तित्व में झलकती है। तब किसी भी तरह के मरहम से फायदा होता नही दिखता।

शब्द कई पीढ़ियों को आहत कर सकते हैं। एक चोटिल इंसान, कड़वाहट की विरासत को सिलसिला बना सकता है। दर्द से इंसान की पहचान होना लाज़मी है, पर दोस्ती करना ज़रूरी नहीं। बच्चों पर कड़वे बोलों के असर पर कई शोध किए गए हैं। आज उसी की बात करते हैं। शुरूआत एक कविता से-

अगर बच्चे आलोचना के साथ पलें,
तो नकारना सीख जाएंगे
अगर आक्रामकता के साथ पलें, तो लड़ना सीख जाएंगे
अगर उपहास उनके बचपन का साथी बना, तो शर्मिंदा रहेंगे, अगर अपमान उनको मिलता रहा,
तो अपराधबोध पालना सीख जाएंगे
उन्हें सब दिया, तो सहनशीलता के अंकुर वृक्ष बन जाएंगे
अगर उनका उत्साह बढ़ाया, तो आत्मविश्वास के सोते बनेंगे
तारीफ मिली, तो सदा सकारात्मकता सीखेंगे
ईमान सिखाया, तो न्याय को पहचानेंगे
उन्हें सुरक्षा दी, तो विश्वास करना सीखेंगे,
उन्हें सहमति मिली, तो खुद को और दुनिया को प्यार से स्वीकारना सीखेंगे

एक स्कूल की दीवार पर लिखे हैं यह शब्द। बहुत गहरे मायने हैं इनके। यह शब्द घर में भी लिखे जाने चाहिए।

बच्चे के मन का तो सभी ध्यान रखते हैं, आप यही कहेंगे न। लेकिन दुनिया भर में हुए शोध यह बताते हैं कि सबसे ज़्यादा बुरा असर शाब्दिक हिंसा का बच्चे पर पड़ता है। इसे अंग्रेज़ी में वर्बल अब्यूज़ का नाम दिया गया है यानी शाब्दिक शोषण। शरीर पर लगे घाव, यहां तक कि खरोचें भी दिखाई देती हैं। परन्तु कठोर शब्द मन को आहत करते हैं।

हमारे घर में ऐसा..... शायद होता हो

आप इन वाकयों और कथनों को पढ़िए, कहीं यह आपके घर जैसा तो नहीं हैं

रोतली है यह तो। कोई इससे बात मत करो। चुप हो जाएगी खुद ही। (एक छोटी बच्ची से ऐसा बड़े या भाई-बहन कोई भी कहता है)

तुममें कोई गुण नहीं है। रंग भी साफ नहीं है। पता नहीं तुम्हारी हाइट क्यों रुक गई। (बच्चों से ऐसा कहना कितना सामान्य है।)

समय से पहले ही सबकुछ चाहते हो तुम। लापरवाह एक नम्बर के हो और चीज़ें भी चाहिए। (लड़कों से अक्सर ऐसा कहा जाता है।)

तुमसे नहीं हो पाएगा यह। रहने दो, कोशिश भी मत करो। (बड़े सोचते हैं कि चुनौती देने से बच्चे बड़ा काम कर गुज़रेंगे, इसलिए ऐसा कह देते हैं)

दीदी और भैया ने तो हमेशा हर खेल में जीत हासिल की है, तुम देखो क्या पाते हो। (उम्मीदों के तीर बच्चे की काबिलियत पर प्रश्नचिन्ह ही नहीं लगाते, उसे एकाएक असुरक्षित भी कर देते हैं)

अपने दोस्त को देखो, क्या कुछ नहीं आता उसे। (सामान्य शाब्दिक हिंसा)

तुम ज़िंदगी में कुछ नहीं कर सकतीं/सकते) सबसे सामान्य शाब्दिक हिंसा)

इनका बच्चों पर असर देखिए –

चोटिल मन, जो दिखाई नहीं देते। इनके निशान हमेशा बने रहते हैं।

घर में शक्ति का अंसतुलन इन्हें दिखाई देता है।

भरोसे का उठ जाना। खुद को बेहद अकेला मानना।

आंसू छुपाना सीख जाना।

भावनात्मक कमज़ोरियां विकसित होना।

जीवन के भावना सम्बंधी फैसलों में गलती करना।

पहचान का संकट (आइडेंटिटी क्राइसिस)

हाल ही में बच्चों पर किए गए एक अध्ययन के नतीजों में यह तथ्य सामने आए –

आत्मविश्वास में कमी। बहुत ज़ोर से अपनी बात कहेंगे, लेकिन जब आहिस्ता से बात की जाए, तो उसी बात पर कायम रहने में असमर्थ होंगे।

पीठ पीछे दूसरों की बहुत आलोचना करेंगे।

किसी पर आसानी से भरोसा नहीं कर पाते।

साथी किसी को भी बना लेंगे। दोस्तों की लम्बी फेहरिस्त होगी, पर सच्चा दोस्त, बेस्ट फ्रेंड कोई नहीं।

अपनी आयु से या तो छोटों की तरह बर्ताव करेंगे या बड़ों की तरह।

भावनात्मक रूप से काफी कमज़ोर हैं।

अलग-थलग से दिखाई देते हैं। दोस्ती में भी ऊष्मा की कमी।

सब चलता है, पर गहरा विश्वास।

ज़िंदगी में कोई किसी को नहीं देता, तो मैं क्यों दूं- यह मंत्र है।

शाब्दिक हिंसा के असर पर अंतहीन चर्चा की जा सकती है। पर सुरक्षित व्यक्तित्वों को आकार देने के मकसद में पांच बातों का ख्यान रखें –

पहली बात- बच्चे से जब भी किसी अनुशासनात्मक मुद्दे पर बात करें, तो शब्दों का बहुत सम्भाल कर इस्तेमाल करें। बात को साफ और सुदृढ़ता से कहें। ढेर सारे उदाहरण न दें, न ही बात को विस्तार देने की कोशिश करें। ऐसा करने से मुख्य मुद्दा खो जाता है।

दूसरी बात - बच्चे की किसी शारीरिक या व्यक्तित्व सम्बंधी मुद्दे पर बात करते समय बहुत सावधान रहें। आपकी राय उसके लिए मायने रखती है। अगर कोई सुधार किया जाना है तो केवल उसी की बात करें। नकारात्मक शब्दों से बचें।

तीसरी बात - अगर बच्चा तीन साल की आयु में बहुत तेज़ दिमाग का है या आठ साल का होते हुए भी बारह साल जितना दिमाग रखता है, तो भी ध्यान रखें कि उसका दिल इस विकास क्रम से दूर है। उसका दिल और भावनाएं कोमल ही हैं। वह कम्प्यूटर, लैपटॉप, मोबाइल आदि चलाना सीख गया हो, पर उसे भावनाओं को समझना-समझाना नहीं आता। यह आपको उसे समझाना होगा।

चौथी बात - उसका विश्वास कभी न तोड़ें। बच्चे से भावनात्मक नज़दीकी रखें, भौतिक नहीं। अगर भरोसे की डोर को आपने सम्भाला, तो वह भी दूसरों पर विश्वास करना आसानी से सीख जाएगा।

पांचवी बात - बच्चे के विकास को सकारात्मक डगर पर रखें। ज़रूरी नहीं है कि हर बात पर उसका बढ़-चढ़कर उत्साह बढ़ाया जाए। जो सम्भव हो और सही हो, वही करने को कहें, पर इत्मीनान से। प्रोत्साहन की मात्रा का सही होना ज़रूरी है। न गुणों को नकारें, न अति उत्साही बनें। यह दोनों नुकसानदायक होंगे।

सुरक्षित और साफ मन एक नहीं, कई सुरक्षित व्यक्तित्वों को आकार देंगे। इसकी ज़िम्मेदारी अभी उठा लें, तो बेहतर।

दीजिए बच्चों को उनका बचपन

आपके बच्चे आज छोटे हैं। कल बड़े हो जाएंगे और साथ ही उनका मासूम बचपन भी चला जाएगा। क्या आप उनके साथ कुछ समय बिताकर उस बचपन के गवाह नहीं बनना चाहते? बच्चों के साथ बिताया आपका हर पल उस जमा पूंजी के समान है, जो आपको सूद समेत तब मिलेगा, जब बच्चे बड़े होकर आपके दिए संस्कारों, मूल्यों और सिद्धांतों पर चलेंगे। तो क्यों न आज से ही बच्चों को उनका बचपन देने की शुरुआत करें।

आज खुद स्कूल छोड़ने जाएं

बच्चों को थोड़ा वक्त देने की शुरुआत उन्हें जगाने, स्कूल के लिए तैयार करने से करें। क्यों न आज उन्हें खुद स्कूल या बस स्टॉप तक छोड़ने जाएं। इस बीच उनसे कुछ मीठी बातें भी होंगी। पापा मैंने कल स्कूल में क्रिकेट खेला, सबसे ज्यादा रन बनाए, टीचर ने मुझे मैथ्स में 10 मार्क्स दिए। मम्मी, मेरी ड्रॉइंग को सबने पसंद किया। यह स्कूल के नोटिस बोर्ड पर लगी है। आपका दिल करेगा मानो इसी तरह रोज बच्चे को स्कूल छोड़ने जाया करें।

दफ्तर से फोन करें

व्यस्तताओं के बावजूद बच्चों को एक बार फोन जरूर करें। सोचें कि वे घर पर क्या कर रहे होंगे, फोन पर कैसी प्रतिक्रिया व्यक्त करेंगे, तब आपको कैसा महसूस होगा। यह जानने की कोशिश करें कि शाम को वे क्या प्लान कर रहे हैं। कहीं उनकी योजना आउटिंग या बाहर खाना खाने की तो नहीं। अगर ऐसा है तो दफ्तर के कामकाज को उसी हिसाब से सेट कर लें। दफ्तर से निकलते समय कामकाज की चिंता भूल जाएं, क्योंकि आप अब अपनी दुनिया में दाखिल होने जा रहे हैं।

बचपन को समझें

शाम को घर लौटते समय बच्चों के लिए उनकी फेवरेट कार्टून फिल्म, ड्रॉइंग बुक या कहानियों की किताब ला सकते हैं। बजाय टीवी के सामने समय गुजारने के, बालमन को जानने उनकी सोच की दिशा समझने का यह अच्छा तरीका है। यह बतौर मां-बाप से भावनात्मक रूप से जुड़ने का भी अवसर देता है।

चलो मिलकर कुछ करें

आपने बचपन में कागज़ की नाव बनाने, फूल, मास्क, फलांइग ऑब्जेक्ट बनाने जैसी कई चीजें सीखी होंगी। बच्चों के साथ खेल-खेल में उन्हें ये एक्टीविटीज सिखाएं। मां-बेटी मिलकर खाना बनाएं तो और भी बेहतर है। बच्चों के साथ गार्डनिंग करें। बच्चों के लिए कुछ स्पेशल करें। उनके दोस्तों को बुला लें। छोटा सा गेट-टुगेदर आयोजित करें।

आज अपेक्षाएं छोड़ दें

आज एक दिन बच्चों से अपनी उम्मीदों, उपेक्षाओं को परे हटा दें। आज उनकी दुनिया में शामिल हो जाएं, जहां आप और बच्चे हों।

साथ डिनर करें

दफ्तर के कामकाज से समय निकालकर कोशिश करें कि आज बच्चों के साथ बैठकर डिनर कर सकें। इस दौरान उनकी शिकायतों, हंसी-मजाक को हल्के अंदाज में सुने। गुस्सा न करें और न ही अपनी राय थोपने या उपदेश देने की कोशिश करें। बच्चों को प्यार से तार्किक ढंग से समझाने की कोशिश करें।

कहानियों-किस्सों की दुनिया गढ़ें

सोने से पहले कुछ समय बच्चों के साथ जरूर गुजारें। कहानियों की किताब से कोई अच्छा सा किस्सा निकालकर उन्हें पढ़कर सुनाएं। कहानियां ऐसी

कि उनमें हमारी संस्कृति, परंपराओं और मूल्यों की महक आती हो।

दें क्वालिटी टाइम

बच्चों के साथ सिर्फ समय बिताना ही अहम नहीं, बल्कि यह देखना ज्यादा जरूरी है कि उससे बच्चे कुछ सीखें। ब्रिटेन में कराई गई स्टडी में यह बात सामने आई है कि बच्चों में मां से ज्यादा पिता द्वारा उसे दिया गया समय अहम होता है। स्टडी के अनुसार, जो पिता अपने बच्चों के साथ ज्यादा समय गुजारते हैं, उनके बच्चे परीक्षा में अच्छे अंक लाते हैं। लेकिन यह तभी मुमकिन होता है, जब आप बच्चे के साथ बिताए गए हर पल को उसके लिए कुछ सीखने का माध्यम बना दें। अध्ययनकर्ताओं का कहना है कि मां-बाप बच्चे के साथ वक्त बिताने के मामले में ज्यादा सकारत्मक हों। इस स्टडी के नतीजों के आधार पर इस साल से ब्रिटेन में मां-बाप को पांच साल से ज्यादा उम्र के बच्चों के साथ ज्यादा से ज्यादा समय गुज़ारने को कहा गया है।

बच्चों की उचित परवरिश

माता पिता चाहते तो हैं कि उन के बच्चे का चहुंमुखी विकास हो लेकिन वे स्वयं अपनी जिम्मेदारी से विमुख रहते हैं, बच्चों की परवरिश कैसे करें, बता रही हैं **सोमा घोष।**

आज हर मातापिता की चाहत है कि उन के बच्चे सब से आगे रहें, कामयाब हों, लेकिन इस के लिए उन की भागीदारी कितनी हो यह न तो वे खुद समझ पाते हैं और न ही उन के बच्चे। इस के लिए सब से बड़ी समस्या आज के एकाकी परिवार हैं जहां मातापिता के नौकरी पर चले जाने के बाद बच्चे घर पर अकेले या तो टेलीविजन देखते हैं या कंप्यूटर के साथ अपना समय बिताते है। ऐसे में उनकी सोच, उन का नजरिया अलग होने लगता है, जिसे समझ पाने मे मातापिता असमर्थ होते हैं।

बच्चों की यही सोच, यही समझ आगे चल कर उन के तनाव और डिप्रेशन का रूप ले लेती है। नतीजतन, घर से भाग जाना, आत्महत्या करना जैसे विकार बच्चों के मन में जन्म लेते हैं। हम इन परिस्थितियों से कैसे निकलें? क्या करें जिस से हमारा आने वाला कल बेहतर हो, ताकि हमारी कामयाबी के साथसाथ बच्चों का उचित विकास भी होता रहे।

इस बारे मे माइंड टैंपल संस्था की अध्यक्ष डा० अंजलि छाबड़िया, जो मुंबई में मनोरोग चिकित्सक है, का कहना है कि आज हर मातापिता अपने बच्चे को डाक्टर या इंजीनियर बनाना चाहते है पर कोई भी अपने बच्चे की प्रतिभा को पहचानने की कोशिश नहीं करता। प्रतियोगिता के इस दौर में वे बच्चे के सहायक होने के बजाय उस पर दबाव डालते हैं, जो गलत है। अगर उन्हें बच्चों को कामयाब देखना है तो कुछ बातें उन्हें हमेशा ध्यान में रखनी होंगी: -

- अपने बच्चों की प्रतिभा को जानने की कोशिश करें।
- व्यस्त रहने के बावजूद बच्चों के साथ कुछ समय अवश्य बिताएं।
- उन के व्यक्तित्व को निखारने में उन्हें सहयोग दें।
- किसी भी काम के लिए उन पर अतिरिक्त दबाव न डालें।
- अपने विचार उन पर न थोपें।
- उन्हें कुछ समय के बाद अपना काम खुद करने के लिए प्रेरित करें। जैसे कई बार मातापिता बच्चों के

प्रोजैक्ट को खुद बना कर स्कूल में भेजते हैं, उन्हें प्रोजैक्ट बनाने में सहयोग दें न कि खुद बनाएं।

- अपने बच्चों को हारना भी सिखाएं। अगर वह मायूस हों या कक्षा में उसे कम नंबर मिलें तो उस की तुलना किसी से न करें बल्कि उसे आगे और अच्छा करने की हिम्मत दें।

- बच्चे की पढ़ाई अच्छी हो इस के लिए घर में पढ़ाई का माहौल बनाएं। ऐसा न हो कि बच्चों को तो टीवी या कंप्यूटर देखने के लिए मना करें पर खुद टीवी और कंप्यूटर से चिपके रहें।

- बच्चे की पढ़ाई में रूचि हो इस के लिए खुद भी पढ़ने का वातावरण बनाएं।

- घर में अपशब्दों का प्रयोग न करें, बच्चे इन्हें जल्दी सीखते हैं।

- अगर आप का बच्चा कोई काम करने या पढ़ने से जी चुराए तो उसे प्यार और धीरज से समझाएं।

- किशोर बच्चे में 'मूड स्विंग' होना स्वाभाविक है। ऐसे में बच्चे को कब क्या कहें इसे मातापिता को समझना चाहिए।

- बच्चे को उस की सीमाएं अवश्य बताएं, लेकिन इसे बहुत प्यार भरे शब्दों के साथ कहें क्योंकि प्यार की भाषा बच्चे जल्दी समझते और अपनाते हैं।

- अगर आप का बच्चा किसी विषय में कमज़ोर है तो उस के लिए दूसरी विद्याओं को तलाशें जैसे कि आजकल कोरियोग्राफी, डांस, सिंगिग, आर्ट आदि कई ऐसे कलात्मक विषय हैं जिन में प्रशिक्षण प्राप्त कर के बच्चा कामयाब हो सकता है।

- मेहनत, लगन और धीरज का पाठ बच्चे को अवश्य पढ़ाएं। ये आदतें बच्चे में जन्म के 5 साल के बाद से ही विकसित करें।

- बच्चों में प्रतिभा को बढ़ाने के लिए किसी प्रकार की दवा का प्रयोग न करें क्योंकि यह योग्यता जन्मजात होती है। उसे स्वस्थ वातावरण व स्नेह से निखारना आप का दायित्व है।

- कुछ कर के सीखना और याद करना बच्चों के लिए सब से लाभदायक सिद्धांत होता है। इस से वे किसी काम को करने से पहले महसूस करते है। ऐसा करने से उन में हिचकिचाहट कम होती है।

बच्चे की परवरिश के बारे में फिल्म अभिनेत्री किरन खेर कहती हैं कि जब मेरा बेटा सिंकदर छोटा था तो मैं काफी आर्थिक परेशानियों से गुज़री, पर मैं ने अपने बच्चे के सामने ज़ाहिर नहीं किया। बच्चे से सब के साथ घुलमिल कर रहने की भावना होनी चाहिए। अगर वह ऐसा कर पाएगा तो कामयाब अवश्य होगा।

बच्चों में जन्मजात प्रतिभा होती है। हो सकता है कि बच्चा पढ़ने में बहुत तेज न हो पर दूसरे विषय में अच्छा करता हो। हर बच्चे की अपनी क्षमता होती है, उसे मातापिता महसूस करें और निखारें।

किरन खेर आगे कहती हैं। कि मेरे बेटे का व्यक्तित्व मेरे जैसा मजबूत है। उसे गोल्फ और टेनिस खेल पसंद हैं। मैं चाहती थी कि वह और अधिक पढ़े पर उस ने अभिनय को अपना कैरियर बनाया। मैं खुश हूं कि उसे समझ है। आज के बच्चे अपना भलाबुरा समझते हैं।

आज के मातापिता बहुत महत्त्वाकांक्षी हैं। अगर उन का बेटा या बेटी किसी टेलीविजन शो में आते हैं तो उन से अधिक उन की मां मंच पर आना चाहती हैं जो मेरे हिसाब से गलत है। आज का बच्चा अपने मातापिता के कहने से कुछ भी नहीं करता। मैं ने भी अपने मातापिता के कहने पर कुछ नहीं किया था।

बच्चा चाहे कैसा भी हो उसे समझना, समझाना सब मातापिता पर निर्भर करता है। अच्छे भविष्य निर्माण के लिए खुद की जिम्मेदारी को समझना जरूरी है। यही नए जमाने की मांग है।

शुभ संग्राम

समराला :– 17 नवम्बर को श्रीमान बलदेव सिंह जी समराला में नायब सिंह जी के घर पहुंचे। उनकी सेहत का पता किया और महोत्सव पर आने की प्रेरणा की।

लुधियाना:– समराला से श्रीमान जी लुधियाना में जगजीत सिंह जी को मिले। श्रीमान जी बहुत उत्साह के साथ मिले और एक स्थान दिखाने ले गए, जहां वह साधन स्थान बनाना चाहते हैं। वह इस ख़्याल से ही बहुत उत्साह से भर रहे थे।

मोगा:– लुधियाना से श्रीमान जी मोगा में जाकर मास्टर अवतार सिंह जी के घर पहुंचे। बहुत हितकर बात हुई, महोत्सव पर सेवाकरी होने के लिए प्रेरणा की गई। उन्होंने अपने घर सभा रखवाने की इच्छा ज़ाहिर की। वह घर में अकेले थे। एक पुराने परिवार के नौजवान को महोत्सव पर पहुंचने की प्रेरणा की।

फरीदकोट:– 18 नवम्बर को श्रीमान जी फरीदकोट में बाली जी, और सुरिन्द्र जी को मिले, उनकी सेहत का पता किया, उन्हें समाजिक पत्रिकाएं मिल रही हैं इससे खुशी प्राप्त हुई।

पदमपुर:– शाम तक श्रीमान जी पदमपुर पंहुच गए। रात को मन्दिर में सभा रखी गई, सभा में बताया गया कि परम पूजनीय भगवान निराली हस्ती हैं। वह अपनी निराली रोशनी में मनुष्य को उसका रूप दिखाते हैं। पहले कोई ऐसी रोशनी नहीं थी। नीचता देखने वा उससे मुक्त हुए बिना कोई भला नहीं हो सकता। किसी और धर्म में नीचता नहीं दिखाई जाती। अपनी और अन्य जनों की घटनाएं बताई। प्रार्थनाशील होकर बैठने की अवश्यकता है, ताकि हम अपनी नीचता देखकर अपना भला कर सकें।

19 नवम्बर:– सुबह की सभा में बताया गया कि मनुष्य आधुनिक चीज़ों का सहयोग लेता है या प्रयोग करता है, उन बरकतों से वह सुखी होता है। दुख और कष्टों से बचकर विकास पाता है। देव धर्म आधुनिक धर्म है। देवात्मा सर्वांग हितकर्ता हैं, उनके भीतर दो अद्भुत पदार्थ विकसित हुए हैं, उनके प्रयोग से मनुष्य विकास पाता है, यह देव ज्योति और देव तेज हैं, जिनका प्रयोग मनुष्य को सच्चे सुख का भागी बनाता है। इसके बिना जीवन नर्क बने हुए हैं।

रात की सभा :– यह सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। इसमें बताया गया कि हम सब अन्धेरे में हैं। हमारी कहां भलाई है, हमें कौन चलाता है, इसका क्या परिणाम होगा, कुछ नहीं पता। हरिद्वार जाकर क्या मिला, हम बन रहे हैं या बिगड़ रहे हैं, कुछ नहीं पता। अन्धेरे में अवश्य हानि होती है। अधिक खाकर मनुष्य मोटा होकर खुद मौत को बुलाता है। अन्धेरे में, दुख, घाटा वा नाश होना अवश्यक है। रोशनी मिलने पर श्रीमान नौध सिंह जी को अपना रूप नज़र आया। वह सदा के लिए इस दर के हो गए। यह दर मनुष्य को अन्धेरे से निकालता है। इससे जुड़ने के लाभ ही लाभ हैं।

20 नवम्बर :– यह सभा भी श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। इसमें बताया कि पूजनीय भगवान की रोशनी में ही हमें अपने भावों का ज्ञान मिलता है। नहीं तो हम अपने आपको ठीक, निर्दोष, बढ़िया वा सुन्दर रूप में ही देखते हैं। हम कितने बड़े, अमीर, वज़ीर, डाक्टर, इंजनियर बन जाएं, लाखों लोगों का इकट्ठ भी कर लें, परन्तु गुरू महाराज की रोशनी के बिना, अपनी ग़ल्ती, कमी वा नीचता नज़र नहीं आती, सुधार तो क्या होना था। फिर

सभापति जी ने अपने वा कुछ अन्य जनों के उदाहरण दिए। किस प्रकार अपनी नीचता को देखने का उन्हें वा अन्य जनों को अवसर मिला। पूरी तनख़्वाह लेकर बच्चों को न पढ़ा कर अपना अन्यायकारी रूप दिखाई दिया। इस रोशनी ने मुझे बच्चों के प्रति मां जैसा व्यवहार देने के योग्य बना दिया। हाजरीन का भी किसी सीमा तक अपनी ओर ध्यान जा रहा था, गुरू महारज के आगे झुक रहे थे।

रात की सभा भी श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने ही करवाई। परम पूजनीय भगवान देवात्मा का विलक्षण देव रूप बताया गया। पाप में डूबी हुई रूहों को बचाने का कार्य बताया गया। श्रीमान नौध सिंह जी, पंडित नेत राम जी और सरदार हरनाम सिंह जी के जीवन का हृदय स्पर्शीय शब्दों में ब्यान किया। श्रीमान मदन मोहन लाल जी के परिवर्तन का ब्यान किया। उनका हृदय भाव विभोर हो रहा था, कुछ श्रोतागण की भी आंखों में आंसु थे। बहुत सुन्दर वातावरण बन रहा था।

21 नवम्बर: – की सुबह की सभा भी श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। यह मनुष्य मात्र के सम्बन्ध में विशेष दिन था। बताया गया कि कैसे गुरू महाराज ने सब धर्मों के महापुरूषों के सम्बन्ध में हमारे भीतर श्रद्धा और सम्मान का द्वार खोल दिया है। चाहे वह श्री गुरू नानक जी वा श्री गोविंद सिंह जी हों, चाहे ईसा मसीह हों या मुहम्मद, चाहे मदर टरीसा या इबार्हिम लिंकन हों, सब को श्रद्धा वा सम्मान देने को प्रेरित किया है। गुरू महाराज की शरण में आने वाले जो जन फरिश्ता बन गए, श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी, कनल साहिब, श्रीमान गुरू बख़्श सिंह जी, उनकी महिमा का ब्यान किया।

शाम की सभा: – श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। इसमें बताया कि मनुष्यों को जो नीच अनुराग चिपटे हुए हैं, वह उसका नाश करते हैं। आत्मा को रोगी, दुर्बल, दुखी बना रहे हैं। काम अनुराग, धन अनुराग, अंह अनुराग, मोह, लोभ अनुराग, यह दिखाई नहीं देते। हानि हो रही है। गुरू महाराज की रोशनी पाकर इनको देखने वा उनसे बचने की आवश्यकता है।

आरम्भिक दिन: – सुबह 6.30 बजे कुछ सेवक वा श्रद्धावान मन्दिर में इकट्ठे हुए। पूजनीय भगवान की छवि के आगे महिमा विषयक भजनों का गान किया। जोश से भरकर जय ध्वनि की गई। आख़िर इन दिनों को हृदय की शुद्धि करने के साध नों द्वारा सफल करने के लिए सहाय प्रार्थना की गई।

9 बजे सुबह सभा की गई। इसमें बताया गया कि मनष्य को धर्म की क्यों अवश्यकता है, धर्म क्या चीज़ है। गुरू महाराज ने अपनी ज्योति में विकसित होकर आठ सचाईयां खोजी हैं। पहली सचाई का पाठ करके समझाया गया। धर्म आत्मा से सम्बन्धित है। आत्मा की गठन, उसके रोग, उसके पतन, उस पतन से मोक्ष और उच्च भावों में विकास के सम्बन्ध में ज्ञान ही सत्य धर्म का एक मात्र ज्ञान है। दुख और विनाश से बचने के लिए धर्म की आवश्यकता है। इससे हाजरीन बहुत प्रभावित हुए।

रात की सभा में सुबह बताई सचाईयों को दुहराया गया, आत्मा कैसे बनता है, उसके भीतर कौन कौन सी शक्तियां हैं। मुख्य शक्ति शरीर निर्माणकारी शक्ति है। यह शक्ति बलवती है तो हमारा वजूद रहता है। इसके नाश से हम नष्ट हो जाते हैं। यह सभा काफी ज्ञान वर्धक थी।

23 नवम्बर सुबह की सभा यहां आखरी सभा थी। इसमें बताया गया कि विश्वास धर्म नहीं होता। उच्च भावों से धर्म आता है। उस से आत्म बल बढ़ता है। कृतज्ञता के बिना कोई धर्म नहीं होता। सभापति

जी ने बहते आंसुओं से उपकारियों के उपकारों का ब्यान किया। उच्च कर्मचारियों का ब्यान किया। कैसे गुरू महाराज ने नाशुकरों को शुक्रगुज़ार बनाया है। अंह का बोध दिया है। देवात्मा के देवरूप का भरे दिल से ब्यान किया, बहुत सुन्दर वातावरण बना। महोत्सव पर आने की अपील की। 1100 रू० दान और 150 रू० चन्दा अख़बार प्राप्त हुआ।

गंगानगर: – 23 नवम्बर को श्रीमान बलदेव सिंह जी 3 साथियों समेत यहां पहुंचे। सभा में बताया गया कि शारीरिक स्तर पर जीना पशु जीवन है। धर्म पाए बिना मनुष्य दुख और हानि उठाता है। अपने आपको जाने बिना मनुष्य सुखी नहीं हो सकता। अपने आपको जानने का अर्थ है अपनी परिचालक शक्तियों को जानना। गुरू महाराज अपनी रोशनी में हमारी परिचालक शक्तियों को दिखाते हैं। इसके द्वारा घरों का नर्क दूर होता है। महा नारकीय वजूदों को बदलकर सुखी बनाया है। परिवर्तन की सुन्दर घटनाएं और अपना परिवर्तन भी सभापति जी ने बताया।

24 नवम्बर सुबह की सभा में बताया गया कि मनुष्य बहुत कुछ अन्धेरे में रहता है। घरेलू और मधुमक्खियों का उदाहरण देकर बताया गया कि मनुष्य हमेशा दूसरों के अवगुण देखता है, ऐसा मनुष्य कभी जीवन में ऊंचा नहीं उठ सकता। जो दूसरों के गुण और महानता को देखते हैं, वह सफल होते हैं।

रात की सभा में बताया गया कि मनुष्य अपने विरोधियों को, गरीबी वा अनपढ़ता को, बिमारी को अपना शत्रु देखता है। परन्तु मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु उसका अपना आप है, उसका अपना नीच जीवन है। उसके नीच सुख अनुराग हैं, उसकी घटनाएं बताई गई। मनुष्य का सच्चा हितैषी कौन है? गुरू महाराज ने फरमाया है कि मनुष्य का सच्चा हितैषी वह है जो उसे नीच जीवन से निकाले और उच्च जीवन दान दे।

25 नवम्बर की सुबह की सभा धर्म की आवश्यकता पर करवाई गई मनुष्य को जिन्दा रहने, सुखी रहने, नाश, वा कलेश से बचने के लिए धर्म की आवश्यकता है। धर्म मन्दिरों, गुरूद्वारों, गिरजाघरों में जाने, मत्था टेकने, प्रसाद लेने का नाम नहीं। "परहित भाव हृदय उपजाओ, धर्म मार्ग की दिग तब जाओ।" परोपकार आत्मा की खुराक हैं सत्संग और उच्च जनों की संगत आत्मा को विकसित करती है। गुरू महाराज पाप जीवन मिटाकर उच्च भाव पैदा करते हैं, मनुष्य को पर हित वा पर सेवा में लगाते हैं।

मल्लेका :– 25.11.2010 गंगा नगर से श्रीमान बलदेव सिंह जी, डाक्टर मुनशा सिंह जी और अनिल कुमार जी सहित मल्लेका पहुंच गए।

शाम की सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। सभापति जी ने बताया कि हमारे देश में बहुत से धर्म हैं, परन्तु धर्म का राज कोई नहीं ला सका। देवात्मा धर्म का राज लाते हैं। देवात्मा ने ज़ो पापाचार सम्बन्धी प्रतिज्ञा रखी है, यदि देशवासी आठ पापों से मुक्त हो जाएं, तो भारतवर्ष में सचमुच धर्म का राज आ सकता है। नशे, मांसाहर, रिश्वत, चोरी, जुआ, बेईमानी, चरित्रहीनता, पशुवध या जीव वध ऐसे पाप हैं, जो नर्क पैदा करते हैं। सब तीर्थ स्नान व्यर्थ सिद्ध हो रहे हैं। धर्म राज, पाप राज को ख़त्म किए बिना नहीं आ सकता। मनुष्य को अकसर नीच भाव वा नीच घृणा भाव ही चलाते हैं। देवात्मा के देव प्रभाव हृदय में उच्च भाव पैदा करके और उच्च व्यवहार पैदा करते हैं। सम्बन्धों में उपकार स्मरण, गुण चिन्तन उच्च दृष्य पैदा करते हैं। कृतघ्नता के कई दृष्य पेश किए गए। श्रद्धा, हमदर्दी, ईमानदारी के आने से धर्म राज आता है। उच्च परिवर्तन ही धर्म राज लाते हैं।

26.11.2010 :– सुबह 8.30 बजे की सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। सभा में बताया कि

महान लोगों ने ऐसी सचाईयां बताई हैं, जो बहुत हितकर साबित होती हैं। जैसे खाना चबाकर खाओ, सुबह ठण्डे पानी से आंखों पर छींटे मारो, सुबह की सैर उमर 20-30 वर्ष बढ़ा देती है। श्रीमान राम सिंह जी कर्मचारी देव समाज का सुन्दर उदाहरण पेश किया। एक और सचाई बहुत थोड़े, सौभाग्यवान जनों को समझ आती है, वह है परम पूजनीय भगवान देवात्मा के देव प्रभावों की महिमा। देव प्रभावों द्वारा आए परिवर्तनों का सभापति जी ने ब्यान किया। यह सभा काफी प्रभावशाली थी।

26.11.2010, 7.30 बजे:- यह सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। इसमें 50-60 जनों की हाज़री थी। इसमें नेचर के विशाल रूप के विषय में बताया गया। नेचर में परिवर्तन नियम बद्ध ढंग से होता है। कुछ अटकलपच्चू नहीं होता। नेचर के नियम अटल हैं। यह निरपक्ष और अटूट हैं। नियम पूरा होने पर उसका नतीजा भी लाज़मी है। हमारा वजूद नेचर का ही अंश है और इसलिए उसके परिवर्तनकारी नियमों के अधीन है। देवात्मा द्वारा पैदा संगत मनुष्य में उच्च परिवर्तन पैदा करती है। श्रीमान नौध सिंह जी, श्रीमान अनोख सिंह जी के परिवर्तन को सभापति जी ने बड़े ज़ोरदार भावों से प्रस्तुत किया। बहुत प्रभावशाली मण्डल बना।

27.11.2010 सुबह 9 बजे:- यह सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई इसमें बताया कि साधारण, मनुष्य कुछ अभ्यासों को धर्म समझता है। इसलिए इन अभ्यासों को करके मनुष्य अपने आपको धर्मवान समझता है। जबकि इसके साथ धर्म का कोई वास्ता नहीं। धर्म की क्यों आवश्यकता है। इस ओर अन्धेरा है। धर्म का सम्बन्ध आत्मा से है। उच्च भावों की प्राप्ति ही धर्म है। शुक्रगुज़ारी का भाव उच्च भाव है, उसके सम्बन्ध में बहुत से दृष्टान्त दिए। कई महान उपकारियों के उपकार श्रीमान जी ने बहते आंसुओं से ब्यान किए और बड़ा ज़ोरदार मण्डल बना। अपने माता जी के उपकारों का वर्णन किया। सभा के अन्त में श्रीमान जगीर सिंह जी ने अपने उपकारियों का ब्यान भरे दिल से किया।

27.11.2010 शाम 7.30 बजे:- यह सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। अच्छी हाज़री थी। इसमें बताया गया कि ईश्वर को मानने वाले पापों को क्षमा की चीज़ समझते हैं। आत्मा के रूप के बारे कोई ज्ञान नहीं रखते गीता में आत्मा को निर्लेप बताया गया है, और यह भी लिखा है कि आत्मा को शस्त्र काट नहीं सकता, अग्नि जला नहीं सकती, पानी डुबो नहीं सकता अर्थात आत्मा अमर है। परम पूजनीय भगवान देवात्मा की शिक्षा है कि आत्मा विश्व का अंश है। अच्छी वा बुरी गति का इस पर असर पड़ता है। नीच वा पाप गति द्वारा आत्मा विकारयुक्त होता है। सच्चे परिशोध बिना यह विकार वा मैल नहीं उतर सकती।

बाकी पृष्ट 2 पर

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts